



National Delhi UP Haryana Uttarakhand Bihar Jharkhand Punjab J&K Himachal West Bengal

You May Like



आजकल

Ĥ



Drivers in Texas Discovered This and They Are Dropping... Texas: Sav Bve To Your Power

Bill If You Own A Home In... EnergyBillCrun

Sponsored Links by Taboola Þ

सम्पूर्ण ई पेपर पढ़ने के लिए यहाँ पर 🌔 क्लिक करें



स्थर्ष प्यालिस्ट सीमयर शीड स्थर्ष प्यालिस्ट से 2023-24 के कजर में तिम से 2023-24 के कजर में तिम से राष्ट्रीय प्राइतिक खेती मिसन (परम्पप्रस्पर) के तत्त अगरे तीन वर्षे से राष्ट्रीय प्राइतिक खेती मिसन (परम्पप्रस्पर) के तत्त अगरे तीन वर्षे से जुदेने के लिए घोषित केंद्रीय सरावन मुक्तिक खेती त्रेप्त प्रायति भे प्राइतिक खेती से जुदेने के लिए घोषित केंद्रीय सरावन मुक्त क्वेती त्र प्रदार परिप्र वर्धे कर राष्ट्रविक केंत्री का स्वार्थन स्वार् स्वीर्थ में गाव के लिए प्रकु वहा कर्यम स्वीर्थ में गाव के गोवर-गुन्न के मिस्म के उपयेश में कदाता है और सावानी के उपयेश में कदाता है और सावानी अपने की के तिराहन के ते कर सावानी के उपयेश में कदाता है और सावानी अपने की के सावन है और सावानी इंग्लंको स्वार्थना प्रत्ना है अ उपयोग स्वार्धना की दिन्दायान्त्रों के उपयोग स्वार्धना की दिन्दायान्त्र के स्वार्धना के सावस्ता के उपयोग स्वार्धना की क्वस्ता ह के स्वार्धना है। स्वार्धना कर तर प्रदेश सेने तान्वी स्वार्धना की वस्तान प्रदेश, जुवतर, राजस्यान, म्रसराप्र, मध्य प्रदेश, नेवल्ती स्वार्धना के दो के लिए पॉडिस्टल्य स्वार्धन से ही 17 लाख किसामा महतित प्राकृतिक खेती को लक्षित और प्रभावी

ता हैरी में बढ़ावा देने के लिए सीइंडेवब्स्यू (काउंसिल आन एनर्जी, इनवायरमॉट एंड वाटर) विभिन्न हितधारकों के साथ, विशेष रूप से आंध्र प्रदेश और राजस्थान

पाने, पराने, भाग से परान्य के उत्तराज करान चाहिए और राज्यों के एकन्दुसरे से संसंवों के लिए प्रेरित करान चाहिए। तीसरा : वो सर पर संतुलता बढ़ाने की एमंत्रीति को अपनाना होगा। प्राप्त पंचावत रत्तर पर प्राकृतिक व्यंत्री करने याने किस्तानों को संस्था को अधिकतम करा पहुंचाना होगा, ताकि कृषि की पर्रपरिक प्रतृतियों की तरफ उनकी प्रतार का प्राप्ते के वितरण और उत्पादी को प्रार्थीरक प्रतृतियों की तरफ उनकी प्रतारक साम्यों के कि तिरारा और उत्पादी को स्वर्मिंग में ज्यास्वाधिक व्यवहार्वा को स्वर्मिंग के आकार में बड़े खेती को तियर करना चाहिए। इस नीति का राष्ट्रीय स्वर्वक्र सा के पिरान पो साम्यंचे करता है। एनप्राप्रपर्फ स्वाकित करता है कि विशेष रूप से आंध्र प्रदेश और राजस्था-में त्राम कर राज है। इप्रसंभ मिले अनुभवों के आधार पर प्राह्ततिक खेती को गएंटीय रतर पर सारुतातापूर्वक खड़ाने के लिए पांच स्वत्यपूर्व कर्म उठप्र जा सफते हैं। पहला: चुकि प्राइतिक खेती के लाभ से जुदे सारथ आगे वदार ती रहे, ऐसे में इसे प्राण्वदा और तासित दुष्टिक्सी के साथ आगे बताना चाहिए। तिन क्षेत्रों में अरोशकृत लाभ ज्यादा और तासिस कम है, (खास पिर पर खाझ युराक्षो के लिए) उन क्षेत्रों में इसे तेती से खदाने को एरुआत को जानी चाहिए। गएंटीय मिशन. लिए) उन क्षेत्रों में इसे तेजे से बढ़ाने की पुरुषाता की जाने चालिए। गएरेषा मिशन, वर्षा आधारित क्षेत्रों को उचित रूप से से ओयत उपज कम और लोग बढ़ाने की संगजनाएं अधिक होती हैं। इसके अलावा, सिरिव क्षेत्रों सहित उन क्षेत्रों में होने वाले प्रयोगों में निवेश करने और साक्ष्यों को जुटाने की भी आवस्यकता है, जहां पर प्रकृतिक खेती के लाभी के साक्ष्य सोमित हैं और जोश्विम ज्यादा हैं। कार्यक्रम को कृषि मंत्रालय की 10 हजार



ऐसे में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा दिए जाने के विशेष प्रयास किए जाने की आवश्यकता है । सरकार ने इस ओर कदम बढाया है जो भविष्य में किसानों और देश के आर्थिक विकास में सहायक साबित होगा । प्राकृतिक खेती में मवेशियों के उपयोग पर भी जोर दिया जाता है। राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन के तहत र सायन मुक्त खेती को प्रोत्साहन दिया जाएँगा जो देशवासियों के स्वास्थ्य के लिए भी हितकारी है

वृस्तरा : विभिन्न प्रासंगिक मंत्रालयं/ योजनाओं और सामाजिक संगठनों के साथ प्रक्रिय जुड़ाव और एसकेल्पा लाने से आवरयकता है। राष्ट्रीय प्रकृतिक खेती मिशन, पशुपालन एवं डेयरी विभाग, प्रामंण विकास विभाग और बायातमी एवं बाद्या स्पतंक्यना दिशालय को विभिन्न योजनाओं के बीच संभावित एक्किस्पा जे संस्तुति करता है। हम एक करम और आगे बहकरा एकीकरण के ऐसे जस्सरों की एक विस्तृत सूची बनाने की जस्रपत है। इसके साथ वह भी बताने की आयरथकता है कि इन अवसरी की कैसे संस्थागत करा दिवा जा सरकता है। चौधा : बाटम-अप इनोवेशन और आवस्पकता अनुरूप परिवर्तन (कटरायुडोवन) पर जान देन चाहिए। पारत के अत्या-अत्या हिस्सों में चल रहे प्राकृतिक खेती के विभिन्न कार्यक्रम इसके दास के अत्या-अत्या को अत्या-अत्या स्रोक दास के अत्या-अत्या की अत्यिक पुरातियों और तकनीकों की फरावान की है। प्रारंध के को अपनी विभिष्ट कृषि जलवायु और साधातिक संदर्भी के अनुरूप मुक्तिक खेती की पट्ठतियों को खोजना और पर्राभाषित करना चाहिए। कृषि क्षेत्र से नुद्दे नचायारों को सफरतायुक ब्रह्मी के पहिए, किसानों को पारम्य को प्राय प्रोक्र कैसे संस्थागत रूप दियां जा सकता है। प्राकृतिक खेती मिशन को स्पष्ट रूप से लागू करने योग्य विवरणों को उपलब्ध कराना चाहिए और राज्यों को एक-दूसरे लिए, किसानों को परामर्श की पूरी प्रक्रिया से जोड़ने और निर्णयों में उनकी भागीदारी

रिषाः किसानों को परासर को पूरी प्रक्रित से नोहने और लोगरें में उनके प्रांभावती मुनिश्चित करने की भी जरूरत है। पांचवा : प्रकृतिक रखेले के लिए प्रक्रिक और लशित रूप से सरकर संसानों को उपल्याक करना चालिए। कार्यक्रम के लशित होत्र में पुरु करते हुए प्रभा हिताप्रत्न सिंप्स्त अधिकारियों और किसानों सरित) के लिए मार्सिक धमता निर्माण और प्रारंभिक दरण में आव में संभावित कर्मा के दौरान किसानों की मटुद करने की जरूरत होंगे। प्राकृतिक दोत्री में प्रतीक्ष दुर्ग की सतत, प्रयंत्रण के अनुरुष्ट तरेगा की सहय करने की जरूरत होंगे। प्रावृत्तिक दोत्र में स्राध्यात के साथ आर्थ के दया व्याना चाहिए। के मामले में सुरक्षित वानों की संपत्न और प्रयोगों से सक्रिता से जुड़ते हुए सहाल तरीके से प्रदेश आग बजुने और साक्ष्यों की जुटाने में निकेश करना चाहिए। (सेखक सीइंडेक्ट्र्य स्र से ब्रह्म ह कारक्रम को कृषि मात्रालय की 10 हजार किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) योजना के तहत 500 एफपीओ बनाते हुए बिक्री योग्य उत्पादन के लिए नजदीकी गांवों में एक-दो हजार हेक्टेयर तक के आपस में जुड़े खेतों को चुनना चाहिए।

Advertisemen



वैश्विक खाद्यान्न संकट से निपटने में सक्षम भारत

<text><text><text><text><text>

MORE NEWS FROM PAGE